साँझा साहित्य मंच की मासिक काव्य गोष्ठी में बिखरे अनेक रंग

करनाल सांझा साहित्य मंच की मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन सेक्टर 12 स्थित हुडा कार्यालय में किया गया। गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में डा. कमर रईस जी पहुंचे। विशिष्ट अतिथि गुलाब सिंह रहे। अध्यक्षता वरिष्ठ ग़ज़लकार हरबंस पथिक ने की। मंच संचालन सतविंद्र राणा ने किया। कृष्ण कुमार निर्माण ने अपने हरियाणवी दोहों के माध्यम से वर्तमान त्रासदी पर व्यंग्य करते हुए कहा की 'खूंटी पै टांग राक्खै, सभयता संसकार, भुंडी तो आच्छी लगै, आच्छी सभ बेकार' पानीपत की सरजमीं से पधारे और चैस के राज्य स्तरीय खिलाड़ी युवा ग़ज़लकार धर्मेंद्र अरोड़ा मुसाफिर ने फरमाया 'दुश्मनों का मोल जान जाओगे, दोस्ती को आजमाकर देख लो। वरिष्ठ ग़ज़लकार और अध्यक्षता कर रहे हरबंस लाल पथिक ने कहा कि चलो मौसमे एहतराम हो जाए, मयखाने का इंतजाम हो जाए। छंद मर्मज्ञ और प्रसिद्ध गीतकार नरेश लाभ ने कहा किसुन लो मेरे मित्र अब, करो समझकर प्यार, वरना सारी जिंदगी, जाएगी बेकार। कवि गोष्ठी में उपस्थित कॉमरेड लाभ सिंह आर्य ने संजय सिंह मस्त की रचना पढ़ते हुए कहा कि आगे कुंआ, पीछे खाई, उसके पीछे पड़ा कसाई। सोनीपत से पधारे हरियाणा सरकार से सम्मानित उर्दू के ग़ज़लकार डॉक्टर कमर रईस ने फरमाया कितुमने चिलमन उठा के देख लिया, रोशनी में नहा के देख लिया। कुंजपुरा से पधारे मस्ती के शायर राजपाल रोजड़ा ने कहा किचमन में कहाँ गुल खिलें हैं, आप के जाने के बाद, हम वीरानों में जले हैं, आप के जाने के बाद। मंच संचालन कर रहे और साँझा साहित्य मंच के महासचिव सतविंदर राणा 'बाल' ने दोहे के माध्यम से अपनी बात कुछ यों की कि गुड़िया मिट्टी काठ की, गढ़ती रचनाकार देता चालन भी उसे, गतिमय रजनीवार। इस अवसर पर शिवम निनानिया, समर्पित कृष्ण मौजूद रहे।

नगरपालिका महिदपुर पेयजल गुणवत्ता को लेकर सजग

पॉली एल्यूमिनियम क्लोराईड (पीएसी) के उपयोग से मिले बेहतर परिणाम

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष ग्रीष्म ऋतु के दृष्टिगत नगरपालिका महिदपुर पेयजल गुणवत्ता को लेकर विशेष सजगता बरत रही है। गणमान्य नागरिकों एवं जलप्रदाय विशेषज्ञों के सुझाव पर फिल्टरेशन में पॉली एल्यूमिनियम क्लोराईड(पीएसी) का उपयोग किए जाने पर बेहतर परिणाम प्राप्त हुए हैं। मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री राजा यादव ने चर्चा में बताया कि पॉली एल्यूमिनियम क्लोराईड(पीएसी) के प्रयोग के बाद की गई जांच में टर्बिडिटी, टोटल हार्डनेस, पीएच वैल्यू में सुधार परिलक्षित हुआ है। नागरिकगण भी अपने जल नमूनों की जांच नगरपालिका में प्रत्येक मंगलवार को आयोजित जल सुनवाई में करा सकते हैं। विदित हो कि शासन के निर्देश पालन में प्रत्येक मंगलवार को नगरपालिका में जलसुनवाई का आयोजन कर जल नमूनों की जांच एवं जलप्रदाय से संबंधित शिकायतों का समाधान किया जा रहा है।

डॉ. अम्बेडकर के योगदान की प्रासंगिकता और आधुनिक भारत की दिशा

भारतीय समाज को विकसित, शिक्षित और जागरूक बनाने का डॉ. अम्बेडकर का स्वप्न एनडीए सरकार पूरा करते दिखाई दे रही है। बावजूद आज भी देश के करोड़ों लोग शिक्षा व अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो पाए हैं। यही वजह है बधुआ मजदूरी, बाल विवाह, गैरबराबरी और गरीबी को किस्मत का खेल या ईश्वराज्ञा मानकर स्वीकार करने वाले और शोषितों की तादाद करोड़ों में है। जुल्म और शोषण का दायरा घटने के बजाय बढ़ा है। एक कुशल अर्थशास्त्री और एक मिशनरी के रूप में उनके योगदान को याद करते हुए यदि भारतीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक न्याय को जन आंदोलन बनाने की ओर आगे बढ़े होते तो कोई वजह नहीं कि समाज का गरीब, पिछड़ा और मजलूम तबके की हालात में वर्षों पहले सुधार न हो गया होता।

उन्होंने भारतीय शिक्षा के साथ-साथ विदेशों में भी उच्च शिक्षा हासिल किया था। जिससे उन्हें भारतीय और विदेशी दोनों तरह के वैज्ञानिक, कानूना और सामाजिक ज्ञान हुआ। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में रिसर्च के दौरान डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने एक थिसिस लिखी- नेशनल डिवोटेड आफ इंडिया जो 1924 में प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने फाइनेंस कमीशन का कन्सेप्ट दिया और उसी कन्सेप्ट के आधार पर फाइनेंस कमीशन की स्थापना हुई। यहां पर इसका जिक्र इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि आज फाइनेंस के उनके विकासवादी कन्सेप्ट की कोई चर्चा नहीं करता और न ही फाइनेंस के मामले में उनके कार्यों पर कोई आगे की रणनीति बनाई जाती है। वे भी नहीं करते जो राजनीतिक दल खुद को अम्बेडकरवादी कहते हैं। गौरतलब है उनके जन्मदिन पर हम उन्हें याद कर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व की तारीफ में तमाम कसीदे गढ़ते हैं लेकिन उनके सामाजिक न्याय, धर्म संबंधी विचार, राष्ट्रीय सुरक्षा और शिक्षा संबंधी तमाम विचारों को जन आंदोलन बनाने से कतराते हैं। यही वजह है कि आज भी समाज में जातिवाद, जातिप्रथा, गंदी प्रथाएं, पाखंड, अंधविश्वास, कुरीतियां, भ्रष्टाचार, यौन अपराध, साम्प्रदायिकता और देश को अस्थिर करने वाली ताकतें वक्त-दर-वक्त सिर उठाती रहती हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने मजदूरों के हितों की रक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए विधिमंत्री के रूप में संविधान में व्यवस्था की और उनके लिए जीवन-पर्यन्त लड़ाई लड़ते रहे। मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी, मजदूरों के भविष्यनिधि की व्यवस्था बाबा साहब ने अपने कार्यकाल में कर दिया था, लेकिन बाबा साहब के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए एनडीए सरकार ने दो सप्ताह पहले न्यूनतम मजदूरी सहित कई सुधारों के जरिए मजदूरों को शोषण से बचाने और उनकी खुशहाली के लिए जो नए प्राविधान कानून में किया है उससे उनके हालात में सुधार आएगा और काफी हद तक वे शोषण से छुटकारा पा जाएंगे। बाबा साहब चाहते थे कि संविधान के तहत एक आर्थिक ढांचे का निर्माण हो। एक गरीब और असहाय व्यक्ति और परिवार के जीवन में किस-किस तरह की समस्याएं आती हैं और उनसे कदम-कदम पर गरीब को किस तरह दो चार होना पड़ता है, उनका भोगा हुआ यथार्थ था। लेकिन उन्होंने संविधान में बदले की भावना से ऐसा कोई प्राविधान नहीं किया जिससे किसी कौम का अहित होता हो। उन्होंने न जाने कितने तिरस्कार, अपमान और उपेक्षाएं झेलीं थीं लेकिन उन्होंने बदले की भावना से कभी कोई कार्य नहीं किया। उच्च जातियों से उन्होंने कभी बदले की भावना से व्यवहार नहीं किया। यही वजह है कि उनके विचारों से प्रभावित होकर एक उच्च जाति की महिला ने उनसे विवाह किया था। गौर तलब है एक युग निर्माता की तरह उन्होंने 'सब का साथ-सब का विकास और सब का विश्वास का फार्मूला अपनाया। उन्होंने उन विचारों को आगे बढ़ाया जो भारतीय जनता के लिए हितकारी थे। उन्होंने भारतीय जनमानस को शिक्षित होने, संघर्ष करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित ही नहीं किया, बल्कि निर्भय होकर अपने अधिकारों को हासिल करने और देश-समाज के प्रति कर्तव्य को पूरा करने के लिए आगे आने का आह्वान भी किया किया।

इतिहास के उन पन्नों को पलटते हैं तो मालूम होता है कि विधिमंत्री रहते हुए उन पर दबाव देकर कुछ ऐसे प्राविधान भी संविधान में कराए गए जो देशहित में नहीं थे उनमें धारा 370 भी एक है। अनुच्छेद 370 जो कभी राजनीति के गलियारे में राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दुनिया में एक चर्चा का विषय माना जाता था को डॉ. अम्बेडकर ने नेहरू के दबाव में दबे मन से अस्थाई रूप में संविधान में जगह दी थी। गौरतलब है संविधान में अनुच्छेद 370 जोड़ने और कश्मीर को 'विशेष' दर्जा देने की मांग शेख अब्दुल ने जब तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू के सामने रखा तो नेहरू ने प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. अम्बेडकर के पास उन्हें भेजा दिया था। डॉ. अम्बेडकर ने कश्मीर को 'विशेष' दर्जा दिलाने के लिए कोई अनुच्छेद जोड़ने से मना कर दिया, परन्तु नेहरू की जिद की वजह से बहुमत के आधार पर यह (अनुच्छेद 370) लागू किया गया। गौरतलब है डॉ. अम्बेडकर ने इस अनुच्छेद को अस्थायी माना। अब जब कि भाजपा सरकार ने श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस धारा को हमेशा के लिए खत्म कर दिया, डॉ. अम्बेडकर के विचारों को ही मूर्तरूप दिया है।

अम्बेडकर ने यूं तो अनेक क्षेत्रों में ऐतिहासिक कार्य किए लेकिन उन्होंने सबसे बड़ा कार्य संविधान निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर और समाज सुधार के रूप में अपना सर्वोच्च योगदान देकर निभाई। उन्होंने धर्म के बारे में अपना विचार देते हुए कहा था- ''कुछ लोगों का सोचना है कि धर्म समाज के लिए जरूरी नहीं है, मैं इस दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करता। मैं धर्म की आधारशिला को जीवन और समाज के व्यवहारों के लिए आवश्यक मानता हूं। साथ में यह भी कहा, ''अगर धर्म (पंथ) को ही मनुष्य के लिए सब कुछ मान लिया जाएगा तो किन्हीं और मानकों का कोई मूल्य नहीं रह जाएगा।'' उन्होंने जीवन को लम्बा बिताने के बजाए, महानता अर्जित करने वाला होने के लिए बनाना चाहिए पर खास जोर दिया।

डॉ.. अम्बेडकर ने कहा, ''ज्ञान का विकास ही मनुष्य का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को हर हाल में शिक्षित होना आवश्यक है। वे महिलाओं के सम्मान के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने कहा,''किसी भी कौम का विकास उस कौम की महिलाओं के विकास से मापा जाता है। इसलिए प्रत्येक परिवार की प्रत्येक महिला को शिक्षित होना आवश्यक है। उन्होंने व्यक्तिगत गुलामी को मानव की सबसे बड़ी दीनता बताया। उन्होंने कहा,''जिस प्रकार, हर व्यक्ति यह सिद्धांत दुहराता है कि एक देश दूसरे देश पर शासन नहीं कर सकता, उसी प्रकार उसे यह मानना होगा कि एक वर्ग दूसरे वर्ग पर शासन नहीं कर सकता है।'' उनके ये विचार संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों में दर्ज हैं लेकिन उन्हें अमलीजामा नहीं पहनाया जा सका है। वह चाहे महिला सुरक्षा के बारे में हो या शोषण, जुल्म और किसी की गुलामी के बारे में।

बाबा साहब ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक रूप से समाज के दबे-कुचले लोगों को विकास की धारा में लाने के लिए क्रांति की आवश्यकता पर जोर दिया। उनका मानना था, क्रांति की सफलता के लिए गुस्सा/जोश ही पर्याय नहीं है बल्कि न्याय, राजनैतिक और सामाजिक अधिकारों के प्रति पूरी तरह से जागरूक भी होना पड़ेगा। वह महानता जन्म से नहीं बल्कि अर्जित करके पाने के हिमायती थे। वह ऐसी संस्कृति के पोषक थे जो सबको आगे बढने के समान अवसर की बात करती हो। वह ऐसी व्यवस्था चाहते थे, जहाँ पर धनवान, निर्धन, अपंग और उपेक्षित सभी को बराबर आगे बढ़ाने का समान अवसर और सुविधा हो। वह कहा करते थे-एक महान् व्यक्ति एक प्रख्यात व्यक्ति से एक बिंदु पर भिन्न है कि, महान् व्यक्ति समाज का सेवक बनने के लिए तत्पर रहता है।

आज जब कि समानता, सहिष्णुता, प्यार, एकता और इंसानियत की बातें खूब की जाती हैं, लेकिन न तो आजादी के 78 सालों में देश और समाज में किसी भी स्तर और दिशा में समानता दिखाई देती है, न तो सहिष्णुता, प्यार और एकता का ही कोई धारा ही आगे बढ़ती दिखाई पड़ती है। जिस लोकतंत्र व्यवस्था की आधार संविधान संभा के वे अध्यक्ष थे, उस संविधान को लेकर राजनीति करना, क्या लोकतंत्र को मजबूत करने का कार्य हैं या लोकतंत्र को कमजोर करने का? क्या लोकतंत्र के नाम पर 'स्वच्छन्दता' को नागरिक आजादी बताना लोकतंत्र को कमजोर करने का कार्य माना जाएगा या लोकतंत्र को मजबूत करने का? ऐसे तमाम सवाल हैं जो आजादी के बहत्तर साल के बाद भी हमारे सामने खड़े हो गए हैं। क्या डॉ. अम्बेडकर के विचारों और कार्यों से आज के राजनेता, राजनीतिक दल, मंत्री, विधायक व सांसद कुछ सीखने की कोशिश करेंगे या महज उनकी मूर्ति पर फूल-माला चढ़ाकर झूठी श्रद्धांजलि देकर आगे बढ़ जाएंगे? उन जीवन, समाज, देश और मानवीय मूल्यों की सुरक्षा और संरक्षण के कार्य कौन आगे बढ़ाएगा जिसे डॉ. अम्बेडकर एक विकसित समाज, देश, संस्कृति और प्रगति के लिए जरूरी मानते थे?

अखिलेश आर्येन्दु -मो. 8178710334
स्तम्भकार, वरिष्ठ पत्रकार और समाजसेवी

भारत की सुरसम्राज्ञी का अवसान- आशा भोसले (1933-2026)- एक युग का अंत, एक अमर धरोहर की शुरुआत

वैश्विक स्तरपर भारतीय संगीत जगत के लिए 12 अप्रैल 2026 का दिन एक गहरे शोक और ऐतिहासिक क्षति का दिन बन गया, जब सुरों की अद्वितीय जादूगरनी आशा भोसले ने 92 वर्ष की आयु में इस दुनियाँ को अलविदा कह दिया। बताया गया है कि आशा भोसले का अंतिम संस्कार (13 अप्रैल) शाम 4 बजे शिवाजी पार्क में होगा, जो लोग भी उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देना चाहते हैं, वे सुबह 11 बजे उनके घर आ सकते हैं। आशा भोसले के निधन के बाद म्यूजिक से लेकर सिनेमा, क्रिकेट और राजनेता भी सभी सिंगर को सोशल मीडिया पर श्रद्धांजलि दे रहे हैं। सोशल मीडिया पर शोक व्यक्त कर रही हैं, मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस लेने वाली आशा ताई केवल एक गायिका नहीं थीं, बल्कि वे भारतीय सांस्कृतिक विरासत की जीवंत प्रतीक थीं। सात दशकों से अधिक लंबे अपने करियर में उन्होंने जिस तरह से संगीत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, वह उन्हें केवल भारत ही नहीं बल्किवैश्विक संगीत जगत की भी एक अमर शख्सियत बनाता है। उनके निधन की खबर ने न केवल संगीत प्रेमियों बल्कि राजनीतिक, सांस्कृतिक और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी गहरे शोक में डाल दिया। भारत के राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह महाराष्ट्र के राज्यपाल मुख्यमंत्री सहित अनेक नेताओं औरकलाकारों ने उन्हेंश्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके योगदान को अविस्मरणीय बताया। आशा भोसले का जन्म 8 सितंबर 1933 को एक ऐसे परिवार में हुआ, जहां संगीत सांसों में बसता था। उनकी बड़ी बहन लता मंगेशकर पहले से ही संगीत की दुनियाँ में एक स्थापित नाम थीं, और इसी वातावरण ने आशा के भीतर भी संगीत के बीज बोए। मात्र 10 वर्ष की आयु में 1943 में उन्होंने अपने गायन करियर कीशुरुआत कर दी थी, जो आगे चलकर एक ऐतिहासिक यात्रा में परिवर्तित हुआ। प्रारंभिक संघर्षों के बावजूद उन्होंने अपनेअद्वितीय स्वर और बहुमुखी प्रतिभा के दम पर धीरे-धीरे बॉलीवुड और भारतीय संगीत उद्योग में अपनी अलग पहचान बनाई।1950 के दशक में उन्होंने जिस प्रकार अपनी आवाज का जादू बिखेरा, उसने उन्हें संगीत के आकाश का बुलंद चमकता सितारा बना दिया।

उन्होंने छोटे बजट की फिल्मों में गाकर अपने लिए जगह बनाई और धीरे-धीरे बड़े निर्देशकों और संगीतकारों का ध्यान आकर्षित किया। बिमल रॉय , राज कपूर जैसे दिग्गजों के साथ काम करने का अवसर उन्हें मिला। संगीतकार ओ . पी .नैयर के साथ उनकी जोड़ी ने कई सुपरहिट गीत दिए, लेकिन 1957 में आई फिल्म नया दौर उनके करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुई। इस फिल्म ने उन्हेंमुख्यधारा की सफलता दिलाई और वे भारतीय फिल्म संगीत की अग्रणी गायिकाओं में शामिल हो गईं।आशा भोसले की सबसे बड़ी विशेषता उनकी बहुमुखी प्रतिभा थी। उन्होंने केवल पारंपरिक फिल्मी गीत ही नहीं गाए, बल्कि गजल, पॉप, भक्ति, शास्त्रीय और लोक संगीत सहित हर शैली में अपनी अद्भुत पकड़ दिखाई। 1981 में आई फिल्म उमराव जान में उनके द्वारा गाई गई गजलें-दिल चीज क्या है', इन आंखों की मस्ती के, ये क्या जगह है दोस्तों- आज भी संगीत प्रेमियों के दिलों में जीवित हैं। इन गीतों ने उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया और यह साबित किया कि वे केवल एक प्लेबैक सिंगर ही नहीं, बल्कि एक संपूर्ण बहुमुखी की धनी कलाकार थीं।

उनकी उपलब्धियां केवल भारत तक सीमित नहीं रहीं। आशा भोसले ने अपने करियर में 20 सेअधिक भाषाओं में गीत गाए, जिसके कारण उनका नाम जीनियस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज हुआ। उन्होंने संगीत को वैश्विक मंच पर भारतीय पहचान दिलाई।उनके गीतों में भारतीयता की खुशबू के साथ-साथ आधुनिकता की झलक भी देखने को मिलती थी, जिसने उन्हें हर पीढ़ी का प्रिय बना दिया।उनका करियर केवल गायन तक सीमित नहीं रहा। 2013 में उन्होंने फिल्म माई के माध्यम से अभिनय की दुनिया में भी कदम रखा और अपने अभिनय से आलोचकों की प्रशंसा प्राप्त की।2020 में उन्होंने डिजिटल युग के साथ कदम मिलाते हुए अपना यूट्यूब चैनल भी शुरू किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे समय के साथ खुद को ढालने में भी माहिर थीं। 90 वर्ष की आयु के बाद भी उनका मंच पर प्रदर्शन करना उनकी ऊर्जा और संगीत के प्रति समर्पण को दर्शाता है। 2025 में दुबई में उनका कॉन्सर्ट इस बात का जीवंत प्रमाण था कि उम्र उनके लिए केवल एक संख्या थी।

आशा भोसले का संगीत सफर केवल उपलब्धियों की कहानी नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है इसको समझने की करें तो, उन्होंने हर दौर में खुद को प्रासंगिक बनाए रखा। 1990 और 2000 के दशक में भी उन्होंने रंगीला, लगान, प्यार तूने क्या किया जैसी फिल्मों में अपनी आवाज देकर यह साबित किया कि वे हर पीढ़ी के साथ तालमेल बैठाने में सक्षम हैं।ए.आर .रहमान जैसे आधुनिक संगीतकारों के साथ काम करते हुए उन्होंने अपने संगीत को नई दिशा दी।उनके निधन के बाद पूरे देश और दुनिया में शोक की लहर दौड़ गई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उन्हें सबसे बहुमुखी कलाकार बताते हुए कहा कि उनका जाना केवल एक कलाकार का नहीं, बल्कि एक युग का अंत है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने उनके साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों को याद करते हुए कहा कि आशा ताई का संगीत के प्रति समर्पण अद्वितीय था। वहीं तेजसथ्वी यादव ने भी इसे संगीत जगत के लिए अपूरणीय क्षति बताया। आशा भोंसले जीवन यह सिखाता है कि प्रतिभा, परिश्रम और समर्पण से किसी भी क्षेत्र मेंअमरता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने न केवल संगीत को जिया बल्कि उसे अपने अस्तित्व का हिस्सा बना लिया। उनका हर गीत एक कहानी कहता है, हर सुर एक भावना व्यक्त करता है, और हर धुन एक याद बन जाती है।आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तब भी उनकी आवाज हमेशा गूंजती रहेगी,रेडियो पर, फिल्मों में, मंचों पर और हर उस दिल में जिसने कभी उनके गीतों को महसूस किया है। उनका निधन एक शारीरिक अंत हो सकता है, लेकिन उनका संगीत अमर है। आने वाली पीढ़ियां उनके गीतों से प्रेरणा लेंगी और उन्हें एक आदर्श के रूप में देखेंगी।आशा भोसले केवल एक नाम नहीं थीं, वे एक युग थीं,एक ऐसा युग जिसने भारतीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाई। उनका जाना एक खालीपन छोड़ गया है, जिसे भर पाना असंभव है। लेकिन उनके गीत, उनकी आवाज और उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी, हमें यह याद दिलाती रहेगी कि सच्चा कलाकार कभी मरता नहीं,वह अपने कला के माध्यम से हमेशा लोगों के दिलों में जीवित रहता है।आशा भोसले क़े निधन पर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति प्रधानमंत्री सहित अनेक नेताओं द्वारा दी गई श्रद्धांजलि की करें तो भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दिग्गज गायिका आशा भोंसले के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए इसे संगीत की दुनिया के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने कहा कि आशा जी की सुरीली और सदाबहार आवाज ने दशकों तक भारतीय संगीत को समृद्ध किया और उनके जाने से संगीत जगत में एक बहुत बड़ा खालीपन आ गया है।भारत के उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने प्रसि?द्ध गायिका आशा भोसले के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।मुझे महान गायिका आशा भोसले जी के निधन की खबर सुनकर गहरा दुख हुआ है। उनके परिवार, प्रशंसकों और संगीत प्रेमियों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं। आशा जी अपनी बहुमुखी आवाज से विभिन्न शैलियों में सहजता गा पाई। इससे उन्होंने भावपूर्ण ग़ज़लों और पारंपरिक भजनों में महारत हासिल की और भारतीय संगीत पर एक अमिट छाप छोड़ी।उनकी बेमिसाल आवाज और संगीत की विरासत लाखों लोगों के दिलों में गूंजती रहेगी और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। ओम शांति।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज आशा भोसले जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया और उन्हें भारत की सबसे प्रतिष्ठित और बहुमुखी आवाजों में से एक बताया।उन्होंने कहा कि उनकी दशकों कीअसाधारण संगीतमय यात्रा ने देश की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया और विश्व भर में अनगिनत दिलों को छुआ, चाहे उनकी भावपूर्ण धुनें हों या जीवंत रचनाएँ, उनकी आवाज़ में एक शाश्वत दमक थी, और उन्होंने कहा कि उनके साथ हुई मुलाकातों को वे हमेशा संजोकर रखेंगे।उन्होंने उनके परिवार, प्रशंसकों और संगीत प्रेमियों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। श्री मोदी ने कहा कि वे पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेंगी और उनके गीत लोगों के जीवन में सदा गूंजते रहेंगे।पीएम ने एक्स पर लिखाःभारत की सबसे प्रतिष्ठित और बहुमुखी आवाजों में से एक आशा भोसले जी के निधन से मैं अत्यंत दुखी हूं। उनकी दशकों की असाधारण संगीतमय यात्रा ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया और दुनिया भर में अनगिनत दिलों को छुआ। चाहे उनकी भावपूर्ण धुनें हों या जीवंत रचनाएं, उनकी आवाज में एक शाश्वत दमक थी। उनके साथ हुई मुलाकातों को मैं हमेशा संजो कर रखूंगा।उनके परिवार, प्रशंसकों और संगीत प्रेमियों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। वे पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेंगी और उनके गीत हमेशा लोगों के जीवन में गूंजते रहेंगे।' भारत के गृहमंत्री अमित शाह जी ने कहा आज हर भारतीय और विशेषकर मेरे जैसे हर संगीत प्रेमी के लिए दुःखद दिन है, जब हम सबकी प्रिय आशा भोसले जी हमारे बीच नहीं रहीं।आशा ताई ने न सिर्फ अपनी मधुर आवाज और अद्वितीय प्रतिभा से एक अलग पहचान बनाई, बल्कि अपने सुरों से भारतीय संगीत को भी और अधिक समृद्ध किया। हर तरह के संगीत में ढल जाने की उनकी अनोखी प्रतिभा हर व्यक्ति का दिल जीत लेती थी। अपनी आवाज से करोड़ों दिलों को छूने वालीं आशा जी ने हिंदी, मराठी, बांग्ला, तमिल, गुजराती सहित अनेक भाषाओं के साथ-साथ लोकगीतों में भी अमिट छाप छोड़ी।आशा ताई की आवाज में जितनी कोमलता थी,उनके व्यवहार में भी उतनी ही सादगी और आत्मीयता थी। उनसे जब भी मुलाकात होती थी, संगीत और कला जैसे अनेक विषयों पर लंबी बातें होती थीं। आज वे भले ही हमारे बीच नहीं हैं, पर अपनी आवाज से वे सदैव हमारे दिलों में रहेंगी।ईश्वर आशा जी को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। उनके परिजनों और असंख्य प्रशंसकों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। ? शांति शांति शांतिपश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी आशा भोसले के निधन पर शोक जताया। उन्होंने कहा कि आशा भोसले एक ऐसी गायिका थीं, जिन्होंने अपनी आवाज से पीढ़ियों तक लोगों के दिलों पर राज किया। उनके अनुसार, वह सिर्फ एक कलाकार नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी थीं, जिनसे नई पीढ़ी को सीख मिलती रहेगी।यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा,भारतीय संगीत जगत की स्वर-सम्राज्ञी,महान सुर- साधिका, पद्म विभूषण आशा भोसले जी का निधन बहुत दुखद और कला जगत की अपूरणीय क्षति है। उनकी अद्वितीय गायकी ने भारतीय संगीत को नई ऊंचाइयां दीं। उनकी मधुर आवाज हमेशा देश वासियों के मन में गूंजती रहेगी। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति और शोकाकुल परिजनों और फैंस को ये अपार दुख सहन करने की शक्ति दे।

संकलनकर्ता लेखक - क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यम सीए (एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र 9284141425

आत्म चिंतन : महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि

क्रोध अग्नि से तेज़ है और कलंक काज़ल से कारी इसमें तुम वो मत खोना जो शान्त रहकर पाया हैंक्रोध अग्नि से तेज है एक प्रसिद्ध दार्शनिक और आध्यात्मिक उक्ति है, जो यह दर्शाती है कि गुस्सा सामान्य आग से भी अधिक विनाशकारी होता है। यह न केवल बाहरी चीजों को, बल्कि व्यक्ति के विवेक, स्वास्थ्य और रिश्तों को भी जलाकर राख कर देता है। आइए मैं सूबेदार रावत गर्ग उण्डू राज स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार आज आपकी सेवा में क्रोध अग्नि से तेज़ विषय पर केंद्रित लघु आलेख पेश कर रहा हूं आशा आपको पसंद आयेगा ।क्रोध के बारे में मुख्य बातें : श्री गर्गाचार्य ऋषि अग्नि से भी अधिक विनाशकारी : यह उक्ति बताती है कि आग शरीर को जला सकती है, लेकिन क्रोध मन और चरित्र को नष्ट कर देता है ।दार्शनिक संदभ : यह अक्सर कहा जाता है कि पाप भूमि से भारी है और क्रोध अग्नि से तेज है ।मानसिक और शारीरिक प्रभाव : लगातार गुस्सा करने से न केवल मानसिक शांति नष्ट होती है, बल्कि हृदय रोग और पाचन संबंधी समस्याओं का खतरा भी बढ़ जाता है ।सांस्कृतिक मान्यता : यह कहावत आमतौर पर जीवन के गहरे रहस्यों को समझाने के लिए उपयोग की जाती है, जहाँ क्रोध को सबसे बड़े दुश्मनों में से एक माना गया है ।रुकावटें सबके रास्ते में होती हैं कोई उनसे थक कर भाग्य को कोसता है तो कोई भाग्य से लड़कर अपना सौभाग्य लिखता है...
मस्तिष्क पर पड़े आवरण (पर्दे) न हटाने से समझाने वाले भी अप्रिय दिखाई देते है.. क्रोध में तुम वह मत खो देना जो शांत रहकर तुमने पाया है.. किसी के साथ किए गए धोखे की सजा जब ईश्वरीय शक्ति देती है, तो याद रखें, बोलने योग्य तो दूर की बात है, वह रोने योग्य भी नहीं छोड़ती। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं।
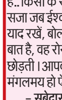
- सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज)
स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार, पत्रकार। श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान